उर्दू के अज़ीम शायर

विजय गुप्त

उर्दू के अज़ीम शायर

विजय गुप्त

अनुक्रम

भूमिका

अमीर ख़ुसरो

ज्ञान की जलती हुई लौ 8

मीर तक़ी मीर

'पर मुझे गुफ़्तगू अवाम से है' 39

नज़ीर अकबराबादी

जनता और ज़मीन का शायर 64

मिर्ज़ा ग़ालिब

फिर मुझे दीद-ए-तर याद आया 84

अकबर इलाहाबादी

जो अक़्ल को न बढ़ाये वो शायरी क्या है 108

फ़िराक़ गोरखपुरी

ज़िन्दा अल्फ़ाज़ों का शायर 127

जोश मलीहाबादी

अंधेरे में उजाला, उजाले में अंधेरा 145

मख़दूम मोहिउद्दीन

एक दहकती हुई आग 176

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

अँधेरे के विरुद्ध उजाले की कविता 206

असरार-उल-हक़ मजाज़

ए ग़मे दिल क्या करूँ 218

जीवनसाथी किरन गुप्ता के लिए

हार्दिक आभार:

उर्दू साहित्य- मर्मज्ञ और सीनियर एडवोकेट अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी

डॉक्टर राम कुमार मिश्र

एहतेशाम सिद्दीक़ी

उमाकान्त पांडेय

शाकिर अली

रफ़ीक़ ख़ान

भूमिका

इस पुस्तक में उर्दू के दस महान कवियों को समझने और आज के सन्दर्भ में परखने का प्रयत्न है। साम्प्रदायिक शक्तियाँ हिन्दी और उर्दू का मेल-मिलाप नहीं चाहती हैं। भाषा उनके लिए जोड़ने का उपकरण नहीं बल्कि तोड़ने का हथियार है। इस हथियार का प्रयोग पराधीन भारत में अंग्रेज़ों ने सबसे पहले किया था। उन्होंने हिन्दी और उर्दू के बीच शत्रुता और फूट के बीज बोये। इस बीज को पल्लवित-पुष्पित करन का काम स्वतंत्र भारत में साम्प्रदायिक राजनीतिक दलों और धार्मिक कठमुल्लों ने किया। उन्होंने ईश्वर और अल्लाह के बीच दीवार खड़ी कर दी। हिन्दी और उर्दू के बीच बैरियर लगा दिया। लेकिन हमारे कालजयी कवियों ने भेद-भाव की हर दीवार तोड़ दी। किसी भी बैरियर को मानने से इनकार कर दिया।

ऐसे ही कालजयी उर्दू कवियों पर एक शृंखला लिखने का विचार दिगम्बर भाई के मन में आया। जून 2019 में हुई पहली मुलाक़ात में उन्होंने प्रस्ताव रखा कि गार्गी प्रकाशन के लिए तरक्कीपसन्द शायरों के जीवन और कर्म पर नयी रचना की जाये। पहले-पहल पत्रिका के लिए काम शुरू हो गया। पाठकों ने पसन्द किया तो हौसला बढ़ा। लेकिन डर बराबर लगता रहा कि कहीं कोई भूल-चूक न हो जाए। एक बार तो ऐसा लगा कि लिख नहीं पाऊँगा। मैंने साथी से माफ़ी माँगते हुए कहा कि 'नहीं लिख पा रहा हूँ, आप अंक मेरे लेख के बिना जारी कर दें।' उन्होंने कहा कि- 'जब तक आपका लेख नहीं आएगा, तब तक पत्रिका का अंक जारी नहीं होगा।' उनके भरोसे और पाठकों की

हौसला-अफ़ज़ाई से हिम्मत बढ़ी और मैं जी-जान से काम में जुट गया। सभी साथियों और सुधी पाठकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

पुस्तक जैसी भी बन पड़ी है, आपके हाथों में है। आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

विजय गुप्त,

11 जनवरी, 2022